वर्षम् - ०४ अङ्कः – ०४ शोधज्योतिः
जनवरी – दिसम्बर, 2022 ISSN-2350-0700

महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुंतल नाटक पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव

डॉ. कुसुमलता टेलर[१]

सारांश

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य जगत के वे नक्षत्र है जिन्होंने अपने दीप्ति से समस्त जगत को आलोकित कर रखा है। महाकवि कालिदास किस काल में हु यह समय तो अनिश्चित है। किंतु अधिकांश विद्वानों ने उनका समय प्रथम शताब्दी बताया है साथ ही अनेक विद्वानों और आलोचकों द्वारा कवि कालिदास की जन्मभूमि उज्जयिनी मानी जाती है।[२]

कवि कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक संस्कृत साहित्य का एक प्रसिद्ध नाटक है। भारतीय विद्वानों ने एवं आलोचकों ने इसे नाट्य साहित्य में सबसे श्रेष्ठ बतलाया है और कहा है कि "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुंतला स्मरिष्यति त्वां।'' इस नाटक में सात अंक है - प्रथम अंक में हस्तिनापुर का राजा दुष्यंत आखेट करता हुआ वन में जाता है वह मृग का पीछा करता हुआ आश्रम की ओर जा रहा है और तभी वैखानस से यह ज्ञात होता है कि यह कण्व श्रषि का आश्रम है। वे अपनी पुत्री शकुंतला को अतिथि सत्कार हेतु नियुक्त कर उसके प्रतिकूल भाग्य की शांति हेतु सोमतीर्थ गए हैं। राजा आश्रम में प्रवेश कर अनसूया, प्रियंवदा और शकुंतला को देखता है। आश्रम में इन तीनों कन्याओं को भ्रमर बाधा से पीड़ित देखकर राजा उनकी रक्षा हेतु अपने आप को प्रकट कर देता है। वही उसे ज्ञात होता है कि शकुंतला विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है और महर्षि कण्व उसके पालक पिता है। द्वितीय अंक में राजा का मित्र माढव्य आखेट से अवकाश चाहता है। शकुंतला के प्रति आकृष्ट राजा भी आखेट से बचना चाहता है। उसी समय वहां आश्रम के दो ऋषि आकर राजा से यज्ञ में विघ्न डालने वाले राक्षसों से रक्षा हेतु प्रार्थना करते हैं। राज माता के बुलावे पर दुष्यंत अपने कर्तव्य को निभाने के लिए एवं माता की

---

[१] *सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, माणिक्यलालवर्मा श्रमजीवी विद्यालय, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, (डीम्ड टू बी) यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान। Emai Id: drkusumlata1977@gmail.com 110, गणेशनगर, छोटी पीपली वाली गली, विश्वविद्यालय मार्ग उदयपुर 313001. राजस्थान। Mob. 9461201557*

[२] *मेघदूतम, कवि कालिदास, संपादक, बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा, 28 20 02, पृष्ठ संख्या 24 -26*

इच्छा को पूर्ण करने हेतु माढव्य को अपने स्थान पर भेज देता है। तृतीय अंक में काम पीड़ित शकुंतला पुष्प शैय्या पर लेटी है। राजा छुप कर शकुंतला प्रियंवदा एवं अनुसूया की बातें सुनता है। शकुंतला दुष्यंत के प्रति अपने प्रेम का कथन करती है और सखियों के कहने पर नलिनी पत्र पर नखो से प्रेम पत्र लिखती है। अवसर पाकर राजा भी शकुंतला से अपने प्रेम को प्रकट कर देता है। राजा शकुंतला को सुखी रखेगा इस आश्वासन से आश्वस्त होकर दोनों सखियां वहां से चली जाती है। दुष्यंत और शकुंतला का गांधर्व विवाह हो जाता है और शकुंतला गर्भवती हो जाती है। चतुर्थ अंक में दुष्यंत के राजधानी लौट जाने के पश्चात् शकुंतला उसके विरह में पीड़ित एवं ध्यान मग्न होने के कारण दुर्वासा ऋषि के आने पर वह उनका उचित सत्कार नहीं कर पाती और वे रुष्ट होकर उसे श्राप देते हैं कि तू जिस का स्मरण कर रही है वह स्मरण दिलाने पर भी तुझे स्मरण नहीं करेगा। प्रियंवदा के अनुनय करने पर अभिज्ञान की वस्तु के दर्शन से श्राप का अन्त हो जाएगा यह कहकर वे अंतर्ध्यान हो गए। कण्व ऋषि सोमतीर्थ से लौट आते हैं और यज्ञशाला में उनको ज्ञात होता है कि दुष्यंत और शकुंतला ने गांधर्व विवाह कर लिया है और शकुंतला गर्भवती है। तब वृद्धा गौतमी के साथ शकुंतला को पति गृह भेजने की तैयारी की जाती है। शकुंतला के विदाई का वर्णन किया गया है। पंचम अंक में शार्ङ्गरव, शारद्वत तथा गौतमी के साथ शकुन्तला दुष्यंत के राज दरबार में पहुंचते है किंतु दुर्वासा के श्राप के कारण राजा शकुंतला को पहचानने से इनकार कर देता है। शकुंतला द्वारा अंगूठी दिखाने पर अंगूठी नहीं मिलती है और गौतमी कहती है शक्रावतार तीर्थ में जल की वन्दना करते हुए जल में गिर गई होगी। शकुंतला राजा व उन दोनों के बीच हुए मधुर प्रसंग सुनाती है पर राजा यह समझता है कि यह तपस्वी मुझे ठगने आए हैं और राजा उनकी बातों का उपहास करता है। राजपुरोहित उपाध्याय सोमरात सुझाव देते हैं कि प्रसव पर्यंत शकुंतला पुत्रीवत् मेरे घर रहे क्योंकि सिद्ध पुरुषों ने सर्वप्रथम राजा के चक्रवर्ती पुत्र होने की भविष्यवाणी की है। तभी शकुंतला को एक दिव्य ज्योति आकर उठा कर अंतर्ध्यान हो जाती है। षष्ठ अंक में शक्रावतार निवासी एक मछुआरे को रोहित मछली के पेट से एक मुद्रिका प्राप्त होती है जिसे बेचते समय राजपुरुष उसे पकड़कर राजा के समक्ष ले जाते हैं। राजा अंगूठी देखते ही उसे शकुंतला संबंधी संपूर्ण वृत्तान्त याद आता है और वह शकुंतला के विरह में दुःखी होकर वसंतोत्सव रोक देते हैं। तभी देवराज इंद्र का सारथी इंद्र का संदेश लेकर आते हैं कि कालनेमि के वंशज दुर्जय नामक दानवों का संहार करने के लिए इन्द्र ने राजा को आमंत्रित किया हैं, राजा रथारुढ होकर स्वर्ग के लिए प्रस्थान करता है। सप्तम अंक में राजा दुष्यंत राक्षसों का संहार कर पुनः पृथ्वी की ओर लौट रहा होता है तो मार्ग में हेमकूट पर्वत पर मारीच, कश्यप तथा उनकी धर्मपत्नी दाक्षायणी अदिति के दर्शन करने हेतु जाता है वहां उसे शकुंतला के पुत्र सर्वदमन को एक शावक के साथ क्रीड़ा करते हुए देखता है और वहाँ बालक के हाथ से गिरी हुई अपराजिता नामक औषधि को उठा लेता है यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित होती हुइ तपस्विनियां शकुंतला

को बुलाती है और तब राजा और शकुंतला का मिलन होता है। राजा शकुंतला से क्षमा याचना करता है और पत्नी पुत्र सहित आश्रमवासियों से विदा लेते हैं।

महाकवि कालिदास संस्कृत के एक महान साहित्यकार हैं और अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति में ही जीवन यापन किया। अतः कवि कालिदास का संपूर्ण साहित्य भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। भारतीय संस्कृति की कुछ प्रमुख विशेषताएं जैसे आश्रम व्यवस्था, अतिथि सत्कार, दैनिक यज्ञ, विवाहादि सोलह संस्कार, गुरु की महत्ता, मातृदेवो भव, नारी का सम्मान, परोपकार की भावना आदि कुछ ऐसी विशेषताएं कवि कालिदास के संपूर्ण साहित्य में दर्शनीय है। साहित्य समाज का दर्पण होता है इसलिए कवि लोग अपने साहित्य में अपनी संस्कृति को परे रख कर कोई रचना करे ऐसा कदापि संभव नहीं है। महाकवि कालिदास भारतीय भूमि पर उत्पन्न एक महान साहित्यकार होने के नाते उन्होंने अपने प्रत्येक काव्य एवं नाटक में भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का प्रयोग किया है। जिससे प्रत्येक भारतीय अवगत है और विशेषताओं के कारण मैं भारतीय हूं गर्व महसूस करते हैं। भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में यदि देखे तो प्राचीन काल में आश्रम व्यवस्था प्रचलित थी। आश्रम चार प्रकार के होते थे - ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम। ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यक्ति अपनी शिक्षा दीक्षा गुरु के पास रहकर गुरु के निवास स्थल अथवा किसी तपोवन अथवा किसी गुरु के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करता था और यही आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था। आश्रम का अन्य नाम तपोवन भी है अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक मे कवि कालिदास ने नाटक के प्रारंभ में ही इस तपोवन अथवा आश्रम का अत्यंत सुंदर वर्णन किया है। अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक का प्रारंभ ही आश्रम वर्णन से प्रारंभ होता है। आश्रम वह स्थल है जहां पर किसी का वध नहीं किया जा सकता चाहे वह पशु पक्षी ही क्यों न हो। अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक के आरंभ में ही जब दुष्यंत राजा मृग का पीछा करता हुआ जा रहा था तभी आवाज आती है कि भो भो राजन् ! आश्रमोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्य: ।[३] तब राजा मृग का पीछा करना छोड़ देता है क्योंकि राजा भी भलीभाँति इस बात से अवगत है कि आश्रम अवध्य स्थल है। आश्रम शिक्षा दीक्षा का स्थान है किसी को मारने का स्थान नहीं है अपितु वहां तो रक्षा की जाती है। राजा दुष्यंत भी आर्त त्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि।[४]

इससे हमें ज्ञात होता है कि अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक पर भारतीय संस्कृति का अत्यंत प्रभावित था यही नहीं ऐसा कहा जाता है कि ऋषि मुनियों के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव रखना चाहिए और- तपोवन की पवित्रता को भंग नहीं करना चाहिए। राजा दुष्यंत भारतीय संस्कृति से परिचित था अतः

---

[३] अभिज्ञान शाकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर, पृष्ठ संख्या, 69

[४] वही, श्लोक 1/10, पृष्ठ संख्या, 69

वह जब आश्रम में प्रवेश करता है तो वह कहता है कि विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम।[५] कवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक में आश्रम का इतना सुंदर वर्णन किया है कि मानो हम साक्षात् अपने नेत्रों से आश्रम को देख रहे हैं।

नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टातरुणामधः,
प्रस्निग्धाः क्वचिदिंगुदी बुद्धिफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखांकिताः॥

राजा दुष्यंत आश्रम की मर्यादा को भली भांति जानता है अतः वह जब तक आश्रम में रहा तब तक मर्यादित होकर रहा यही नहीं अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक के सातवें अंक में राजा दुष्यंत इंद्र की मदद करके पुनः लौटते हुए हेमकूट पर्वत पर स्थित मरीचि ऋषि के आश्रम में देखता है कि एक बालक सिंह को कहता है कि हे शेर जभाई ले। मैं तेरे दातों को गिनूंगा।[६]

क्या वास्तव में ऐसा होता है? वर्तमान में शायद नहीं होता किंतु प्राचीन कालमें शायद ऐसा होता हो क्योंकि आश्रम में कोई भी किसी का वध नहीं करता है तो जानवर भी किसी पर आक्रमण कर मनुष्य को हानि नहीं पहुंचाते और शायद यही कारण है कि सर्वदमन सिंह शावक के दांत गिनने की कोशिश कर रहा है। भारतीय संस्कृति में अतिथि का भी बड़ा महत्व है इस कारण अतिथि को देवता मानकर 'अतिथिदेवो भव' कहा गया है महाकवि कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक में भी अतिथि का बड़ा ही महत्व मानकर कवि ने इसका वर्णन किया है। अभिज्ञान शाकुंतलम् के प्रथम अंक में ही शकुंतला के प्रतिकूल भाग्य के शमन करने के लिए महर्षि कण्व शकुंतला पर आश्रम में आने वाले अतिथियों का आतिथ्य सत्कार का दायित्व सौंपकर गए जिससे कोई भी अतिथि बिना जलपान के आश्रम में ना रहे एवं वह प्रसन्न रहें।

भारतीय संस्कृति में वास्तव में अतिथि किसको कहा गया है, अतः मनुस्मृति में अतिथि का लक्षण देते हुए कहा गया है कि -

एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः।
अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मतिथिरुच्यते॥[७]

---

[५] *वही, श्लोक 1/13, पृष्ठ संख्या 76*

[६] *विशुद्धमनुस्मृति, संपादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली -6, मई 2021, 3/102, पृष्ठ संख्या *204*

[७] *अभिज्ञान शाकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ. यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर, 4/1, पृष्ठ संख्या, 200*

अर्थात् जिस के आगमन की कोई नियत तिथि न हो और स्थिति भी जिसकी और अनियत हो वह अतिथि कहलाता है। अतिथि यज्ञ का अधिकारी वही है जो विद्वान हो एवं जिसका आना, जाना और ठहरना अनियत हो, वह चाहे किसी वर्ण भी का हो, उसकी सेवा करना यह एक श्रेष्ठ कर्म है।

महर्षि कण्व की पालिता पुत्री शकुंतला उनकी अनुपस्थिति में अतिथियों का सत्कार करती भी है। किंतु कवि कालिदास ने एक स्थान पर यह भी बताया है कि यदि किसी अतिथि का उचित सम्मान नहीं किया जाए तो वह रुष्ट होकर वह किसी का अहित भी कर सकता है जैसे कि अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक के चतुर्थ अंक में दुर्वासा ऋषि जब आश्रम में आते हैं शकुंतला राजा दुष्यंत के ख्यालों में खोई होती है तब दुर्वासा उचित आथित्य न पाकर शकुंतला को शकुंतला को श्राप देते हुए कहते हैं कि -

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतमिव॥[८]

अतः आगत अतिथि का सदैव सम्मान करना चाहिए और कहा गया है कि

सम्प्राप्त त्वतिथये प्रदद्यासनोदके
अन्नं चैव यथाशक्ति सत्कृत्य विधिपूर्वकम्॥[९]

अर्थात् आए हुए अतिथि के लिए (विधिपूर्वक सत्यकृत्य) व्यवहारोचित विधि के अनुसार सत्कार करके (यथाशक्ति) शक्ति के अनुसार आसन और जल तथा अन्न भी प्रदान करें।

शायद यही कारण है कि कठोपनिषद् में यम देव के यहां आया हुआ अतिथि नचिकेता यम देव की अनुपस्थिति में उसके यहां लगातार तीन दिन भूखे प्यासे रहने पर उसको तीन वरदान प्रदान करता है। जिससे नचिकेता प्रसन्न हो जाए और वह उसका तथा उसके परिवार का अहित न कर सके।

तिस्रो रात्रिर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्तिमेऽस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व॥[१०]

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में अतिथियों का अत्यंत महत्त्व है और हमें आगत अतिथियों का सत्कार अवश्य करना चाहिए।

---

[८] *विशुद्धमनुस्मृति, संपादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली -6, मई 2021, 3/ 99, पृष्ठ संख्या 203*

[९] *वही, 3/99, पृष्ठ संख्या 203*

[१०] *कठोपनिषद् संपादक, डॉ विजेंद्र कुमार शर्मा, प्रकाशक साहित्य भंडार सुभाष बाजार मेरठ 0002 25, 1/9 पृष्ठ संख्या 9*

भारतीय संस्कृति में वर्ण व्यवस्था का भी प्रचलन था। वर्ण व्यवस्था के बारे में कहा जाता है कि वर्ण चार हैं। चारों वर्णों की उत्पत्ति ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से मानी जाती है और कहा गया है कि -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृतः।
ऊरू तदस्य यदवैश्य: पदभ्यां शूद्रो अजायत॥[११]

कालिदास वर्ण व्यवस्था से अवगत थे अत: उन्होंने अपने नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् में भी इसका वर्णन किया था। जैसा कि भारतीय संस्कृति में चार वर्ण बताए गए हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। कवि कालिदास में अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक में वर्ण व्यवस्था का परिचय प्रस्तुत करते हुए नाटक के प्रथम अंक में जब राजा दुष्यंत कण्व ऋषि के आश्रम में कण्व ऋषि की पुत्री शकुंतला का अतिथ्य स्वीकार कर आश्रम में आते हैं और शकुंतला पर जब मोहित हो जाते हैं तब वे उन की सखियों अनसूया और प्रियंवदा से शकुंतला के विषय में जानना चाहते हैं तब उन्हें ज्ञात होता है कि होता है कि शकुंतला महर्षि कण्व ऋषि की पुत्री है। तदन्तर उन्हें ज्ञात होता है कि शकुंतला के वास्तविक जन्मदाता विश्वामित्र और अप्सरा मेनका है। तो दुष्यंत यह जान कर प्रसन्न होता है कि यह क्षत्रिय कन्या है अतः शकुंतला से प्रेम किया जा सकता है। शकुंतला कण्व ऋषि की पुत्री होती तो वह वर्ण से ब्राह्मण होती और राजा क्षत्रिय होने के कारण ब्राह्मण वर्ण की कन्या से विवाह नहीं कर सकता। क्योंकि ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण एक दूसरे से विवाह नहीं कर सकते। किन्तु जैसे ही राजा दुष्यंत को यह ज्ञात होता है कि शकुंतला क्षत्रिय वर्ण की कन्या है और ऋषि काश्यप ने उसे किसी योग्य वर को देने का संकल्प किया है यह सुनकर राजा दुष्यंत अत्यंत प्रसन्न होता है और मन ही मन में अपने आप को कहता है कि -

भव हृदय साभिलाषं सम्प्रति सन्देहनिर्णयो जात:।
आशंङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्॥[१२]

यही नहीं नाटक के द्वितीय अंक में जब राजा दुष्यंत विदूषक से यह कहता है कि कुछ आश्रम वासियों द्वारा में जान लिया गया हूं तब विदूषक राजा को यह कहता है कि क्या तुम्हारे पास आश्रम में जाने का कोई बहाना नहीं हो तो, तुम यह बहाना बना कर जा सकते हो कि आप लोग राजकर लेने के लिए आए हैं। तब राजा कहता है कि - हमें बहाना बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि ब्राह्मण आदि वर्णों से जो धन प्राप्त होता है राजाओं के लिए उसका फल विनाशकारी है किंतु यह तापस जन हमें कभी नष्ट न होने वाला ऐसा तपस्या का छठा भाग देते हैं।

---

[११] *ऋग्वेद पुरुष सूक्त 10/90/12*

[१२] *अभिज्ञान शाकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर,*

यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षति तत्फलम्।
तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः ॥[१३]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कवि कालिदास ने वर्ण व्यवस्था का भी सुंदर वर्णन अभिज्ञान शाकुंतलम में किया है। भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कारों का भी अत्यंत महत्व है। इन सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार का अत्यंत महत्व है। भारतीय परंपरा में विवाह एक पवित्र तथा ईश्वरी बंधन है अतः अटल है। विवाह का जीवन सत्य और कर्तव्य पर प्रतिष्ठित होता था।[१४] भारतीय संस्कृति में मुख्यता आठ विवाह माने जाते हैं-

ब्राह्मो देवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥[१५]

महाकवि कालिदास सोलह संस्कारों में श्रेष्ठ विवाह संस्कार में से उन्होंने विवाह के आठ प्रकारों में से अपने नायक नायिका का गांधर्व विवाह करवाया। गांधर्व विवाह के विषय में मनुस्मृतिकार मनु ने कहा है कि

इच्छयाऽन्योन्यसंयोगे कन्यायाश्च वरस्य च।
गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः ॥[१६]

इस प्रकार कवि कालिदास ने क्षत्रियों में प्रचलित गांधर्व विवाह, विवाह के आठ प्रकारो में से एक है और उन्होंने अपने नायक-नायिका के लिए इसे उचित समझा और वही उन्होंने विवाह का एक प्रकार प्रस्तुत किया।

प्राचीन काल में जब आश्रम व्यवस्था प्रचलन थी तब आश्रम में दैनिक यज्ञों का भी विधान था कालिदास ने अपने नाटक में एक स्थान पर एक तपस्वी के माध्यम से दैनिक यज्ञ के लिए समिधाएं लाने के लिए भेजा है और कहा है कि समिधाहरणाय प्रस्थिता वयम्।[१७] यही नहीं जब असुरों द्वारा यज्ञ में बाधाएं डाली जाती हैं तब भी राजा दुष्यंत को आश्रम में यज्ञ की रक्षा हेतु आमंत्रित किया जाता है और राजा आकर यज्ञ की रक्षा भी करता है। कालिदास ने अपने नाटक में भारतीय संस्कृति में प्रचलित

---

[१३] अभिज्ञान शाकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर, 2/13

[१४] ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोके। - ऋग्वेद, 10/85/24

[१५] विशुद्धमनुस्मृति, , संपादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली -6, मई 2021, 3/ 21, पृष्ठ संख्या 168

[१६] वही, 3/32, पृष्ठ संख्या 174

[१७] अभिज्ञान शाकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर, अंक -1, पृष्ठ संख्या, 72

'मातृदेवो भव' की परंपरा को भी प्रस्तुत किया है। कवि कालिदास ने अपने नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् के द्वितीय अंक में जब राजा दुष्यंत को राजमाता का बुलावा आता है कि उनके व्रत की पारणा हेतु पुत्र की उपस्थिति आवश्यक है तब राजा दुष्यंत कहता है कि – इतस्तपस्विकार्यम् इतो गुरुजनाज्ञाद्वयमप्यनतिक्रमणीयम् किमत्र प्रतिविधेयम्।[१८] राजा अपने कर्तव्य से विमुख नही होता हुआ आश्रम की रक्षा करता हुआ अपने भाई समान विदूषक को माता के उपवास की पारणा हेतु भेजता है। अतः कहा जा सकता है कि राजा दुष्यंत अपनी माता के प्रति अत्यंत आदर के भाव रखता था।

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का भी अत्यंत महत्व है जैसा कि कहा भी गया है

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥[१९]

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है, स्त्रियों को पूजा जाता है वहां सभी प्रकार के आनंद होते हैं और जहां स्त्रियों का सत्कार और सम्मान नहीं किया जाता वहां पर सभी कार्य एवं क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं।

कवि कालिदास ने भी अपने नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् में पुरुष पात्रों के द्वारा स्त्रियों को अत्यंत आदर सत्कार दिया गया है। जिसका उदाहरण हमें नाटक के चतुर्थ अंक में प्राप्त होता है जब गर्भवती शकुन्तला वृद्धा गौतमी के साथ राजा दुष्यंत के महल में पहुंचती है और तब राजा को यह पता चलता है कि वह उसकी गर्भवती पत्नी है किंतु राजा श्राप के कारण उसके तथा शकुंतला के बारे में सब कुछ भूल चुका था। किंतु राजा परस्त्री की चर्चा करना भी उचित नहीं समझता क्योंकि परस्त्री की चर्चा करना ही सही नहीं है। यही नहीं जब राजा शकुंतला को पत्नी के रूप में स्वीकार करने से इंकार कर देता है तब गर्भवती शकुंतला वहीं राज दरबार में खड़ी होती है तब सोमनाथ यह कह कर उसे पुत्रीवत् उसे उस वक्त तक यही ठहरने के लिए के लिए कहता है कि जब तक तुम्हें संतान प्राप्त नहीं होती तब तक तुम यहीं रहो। इस से ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास व उनके पात्र स्त्रियों का अत्यधिक सम्मान करते थे।

निष्कर्ष - इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक पर भारतीय संस्कृति का अत्यंत प्रभाव था। कवि कालिदास भारतीय संस्कृति में पल बढ़े थे। वे भारतीय संस्कृति की महत्ता को जानते थे। अतः भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु पीढ़ी दर पीढ़ी इस ज्ञान

---

[१८] वही, द्वितीय अंक, पृष्ठ संख्या 146

[१९] विशुद्धमनुस्मृति, , संपादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली -6, मई 2021, 3/56 पृष्ठ संख्या 184

धारा को स्थानांतरित करने हेतु अपने साहित्य के माध्यम से विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति को अग्रसर करने हेतु अपने नाटक के माध्यम से भारतीय संस्कृति का महत्व बताया एवं भारतीय संस्कृति के उन समस्त बिंदुओं का प्रयोग इस नाटक में किया जो प्रत्येक व्यक्ति को भारतीय संस्कृति से रूबरू एवं उसकी महत्ता बताने के लिए अत्यंत उपयोगी एवं सार्थक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मेघदूतम, कवि कालिदास, संपादक, बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा।
2. अभिज्ञान शकुंतलम, कवि कालिदास, संपादक, डॉ यशवंत जोशी, कमल बुक डिस्ट्रीब्यूटर उदयपुर।
3. विशुद्धमनुस्मृति, संपादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली।
4. कठोपनिषद् संपादक, डॉ. विजेंद्र कुमार शर्मा, प्रकाशक - साहित्य भंडार, सुभाष बाजार मेरठ।

~~~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~~~